

NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 18-04-2026

विषय सूची

विश्व अर्थव्यवस्था में भारत छठे स्थान पर

1969 का बैंक राष्ट्रीयकरण

भारतीय अंतरिक्ष स्थिति जागरूकता रिपोर्ट 2025 (ISSAR-2025)

संक्षिप्त समाचार

हरिवंश तीसरी बार राज्यसभा उपसभापति निर्वाचित

सरकार द्वारा रिलिफ(RELIEF) योजना के कवरेज का विस्तार

राष्ट्रीय न्यूनतम वेतन स्तर (NFLMW)

भारत का प्रथम वॉटर-न्यूट्रल कोचिंग डिपो

भारत के चमगादड़ों की स्थिति रिपोर्ट 2024-25

विश्व अर्थव्यवस्था में भारत छोटे स्थान पर

संदर्भ

- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) द्वारा जारी नवीनतम विश्व आर्थिक परिदृश्य (वर्ल्ड इकनॉमिक आउटलुक—WEO) के अनुसार, भारत नाममात्र सकल घरेलू उत्पाद (Nominal GDP) के आधार पर विश्व की छोटी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था पर फिसल गया है।
- भारत का GDP वर्ष 2026 में अनुमानित 4.15 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर है, जो यूनाइटेड किंगडम और जापान से पीछे है।

वैश्विक GDP रैंकिंग कैसे निर्धारित होती है

- IMF अर्थव्यवस्थाओं को अमेरिकी डॉलर में नाममात्र GDP के आधार पर रैंक करता है।
- यह स्थानीय मुद्रा में मापे गए GDP और अमेरिकी डॉलर के सापेक्ष विनिमय दर पर निर्भर करता है।
- इन चर में किसी भी प्रतिकूल परिवर्तन से रैंकिंग प्रभावित हो सकती है, भले ही वास्तविक वृद्धि सुदृढ़ बनी रहे।

Rank	Country	GDP (USD trillion approx)
1	United States	30.8
2	China	19.6
3	Germany	4.7
4	Japan	4.4
5	United Kingdom	4.0-4.3
6	India	3.9-4.2

भारत की रैंकिंग में गिरावट के कारण

- **GDP अनुमान का संशोधन:** भारत ने 2026 में नए आधार वर्ष के साथ GDP श्रृंखला को संशोधित किया।
 - 2025-26 के लिए नाममात्र GDP को ₹357 लाख करोड़ से घटाकर ₹345 लाख करोड़ कर दिया गया, जिससे पूर्व में अधिक आकलन का संकेत मिला।
 - इस संशोधन ने भारत का GDP डॉलर के संदर्भ में लगभग \$4.1 ट्रिलियन से घटाकर \$3.9 ट्रिलियन कर दिया।
- **भारतीय रुपये का अवमूल्यन:** विगत वर्ष भारतीय रुपये का अमेरिकी डॉलर के मुकाबले उल्लेखनीय अवमूल्यन हुआ।

- चूंकि GDP रैंकिंग डॉलर के आधार पर की जाती है, मुद्रा का अवमूल्यन भारत के सापेक्ष आर्थिक आकार को कम करता है।
- **विनिमय दर विषमता:** ब्रिटिश पाउंड और जापानी येन रुपये की तुलना में सुदृढ़ हुए, जिससे भारत और यूनाइटेड किंगडम व जापान के बीच अंतर बढ़ गया।
 - इसके परिणामस्वरूप दोनों देशों ने भारत को पीछे छोड़ दिया, भले ही उनकी वृद्धि मामूली या गिरावट वाली रही हो।
- **प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं का निकट समूह:** संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के बाद आगामी चार अर्थव्यवस्थाएँ लगभग \$4 ट्रिलियन के आसपास समूहित हैं।
 - आँकड़ों या विनिमय दर में छोटे बदलाव भी इस समूह के अंदर रैंकिंग को आसानी से बदल सकते हैं।

रैंकिंग परिवर्तन के निहितार्थ

- **आर्थिक मूलभूत तत्वों पर सीमित प्रभाव:** वैश्विक रैंकिंग में गिरावट भारतीय अर्थव्यवस्था में किसी संरचनात्मक कमजोरी का संकेत नहीं देती।
 - भारत की वृद्धि की दिशा सुदृढ़ बनी हुई है, जैसा कि FY26 में 7.4% (घरेलू अनुमान) और FY27 में 6.5% (IMF अनुमान) की वास्तविक GDP वृद्धि से परिलक्षित होता है।
- **धारणा और वैश्विक स्थिति पर प्रभाव:** वैश्विक GDP रैंकिंग निवेशकों की भावना और अंतर्राष्ट्रीय विश्वास को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
 - निम्न रैंकिंग अस्थायी रूप से सापेक्ष आर्थिक मंदी की धारणा उत्पन्न कर सकती है, भले ही मूलभूत तत्व स्थिर हों।
- **रणनीतिक आर्थिक लक्ष्यों में विलंब:** भारत का शीर्ष तीन वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं में स्थानांतरण पहले की अपेक्षा से अधिक समय ले सकता है।
 - अनुमान है कि भारत 2031 तक जर्मनी को पीछे छोड़ देगा और विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

GDP, current prices (Billions of U.S. dollars)	Germany	Japan	United Kingdom	India
2019	3,960	5,246	2,877	2,776
2020	3,938	5,189	2,726	2,612
2021	4,358	5,226	3,195	3,085
2022	4,204	4,448	3,193	3,250
2023	4,564	4,385	3,422	3,501
2024	4,684	4,190	3,695	3,761
2025	5,048	4,435	4,003	3,916
2026	5,453	4,379	4,265	4,153
2027	5,642	4,562	4,466	4,579
2028	5,819	4,744	4,675	5,059
2029	6,003	4,873	4,898	5,599
2030	6,178	5,002	5,148	6,173
2031	6,352	5,128	5,403	6,792

Source: IMF

प्रमुख आर्थिक अवधारणाएँ

सकल घरेलू उत्पाद (GDP)

- GDP किसी देश की घरेलू सीमा के अंदर एक विशिष्ट अवधि (सामान्यतः तिमाही या वर्ष) में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का कुल मौद्रिक मूल्य है।
- वर्तमान आधार वर्ष:** 2022–23 (2026 में अद्यतन; पूर्व में 2011–12)
- जारीकर्ता:** राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO), सांख्यिकी और कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय (MoSPI)

नाममात्र बनाम वास्तविक GDP

- नाममात्र GDP:** वर्तमान बाजार मूल्यों पर आर्थिक उत्पादन को मापता है, जिसमें मुद्रास्फीति का प्रभाव शामिल होता है। यह वर्तमान मूल्य के संदर्भ में अर्थव्यवस्था के आकार का आकलन करने में उपयोगी है।
- वास्तविक GDP:** मुद्रास्फीति को समायोजित करता है और उत्पादन को स्थिर आधार वर्ष की कीमतों पर मापता है, जिससे समय के साथ वास्तविक वृद्धि का अधिक सटीक आकलन होता है।

आधार वर्ष क्या है?

- आधार वर्ष वह मानक वर्ष होता है जिसका उपयोग आर्थिक और सांख्यिकीय गणनाओं में तुलना के लिए किया जाता है।
- यह एक संदर्भ बिंदु प्रदान करता है जिसके विरुद्ध GDP, CPI और IIP जैसे संकेतकों के वर्तमान मानों को मापा जाता है ताकि वास्तविक परिवर्तनों का पता लगाया जा सके।

महत्त्व:

- यह हमें मुद्रास्फीति के प्रभाव को हटाकर वास्तविक वृद्धि देखने की अनुमति देता है।
- सुनिश्चित करता है कि आँकड़े अर्थव्यवस्था की वर्तमान संरचना, उपभोग पैटर्न और कीमतों को प्रतिबिंबित करें।

स्रोत: IE

1969 का बैंक राष्ट्रीयकरण

समाचार में

- भारत में बैंकों का राष्ट्रीयकरण स्वतंत्रता (1947) के बाद लिए गए सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णयों में से एक माना जाता है।

पृष्ठभूमि और आवश्यकता

- भारत में बैंकिंग मुख्यतः शहरी क्षेत्रों तक सीमित थी, जिसके कारण ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों को 1960 के दशक तक बैंकिंग सेवाओं से वंचित रहना पड़ा।
- इसके परिणामस्वरूप कृषि, लघु उद्योग और स्वरोजगार जैसे क्षेत्रों को बैंकिंग एवं ऋण सुविधाओं तक सीमित पहुँच मिली।
- इससे यह धारणा बनी कि निजी बैंक लाभ-उन्मुख हैं और सामाजिक रूप से उत्तरदायी नहीं हैं, क्योंकि वे उच्च लागत के कारण ऋणों का विविधीकरण करने से बचते थे।
- इसीलिए 1969 का बैंक राष्ट्रीयकरण किया गया ताकि बैंकिंग को नियोजित विकास के अनुरूप बनाया जा सके, प्राथमिकता वाले क्षेत्रों को ऋण सुनिश्चित किया जा सके और धन के संकेंद्रण को कम किया जा सके।

1969 का बैंक राष्ट्रीयकरण

- 1969 का बैंक राष्ट्रीयकरण, प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के नेतृत्व में किया गया एक प्रमुख आर्थिक सुधार था, जिसमें 14 बड़े निजी बैंकों को सरकारी नियंत्रण में लाया गया ताकि बैंकिंग को समाजवादी और विकासात्मक लक्ष्यों के अनुरूप बनाया जा सके।

- यह 1955 में भारतीय स्टेट बैंक के राष्ट्रीयकरण जैसी पूर्ववर्ती सुधारों पर आधारित था और भारत की बैंकिंग प्रणाली को सुदृढ़ एवं स्थिर बनाने के लिए बैंकिंग क्षेत्र का एकीकरण एवं विनियमन करने का उद्देश्य रखता था।

सकारात्मक प्रभाव

- **वित्तीय समावेशन:** ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में शाखा नेटवर्क का विस्तार हुआ, जिससे बैंकिंग सेवाओं तक पहुँच बढ़ी।
- **प्राथमिकता क्षेत्रों को ऋण:** कृषि, लघु उद्योग और कमजोर वर्गों को संस्थागत ऋण प्राप्त हुआ।
- **सामाजिक समानता:** औद्योगिक घरानों का बैंकिंग पर प्रभुत्व कम हुआ और वित्त को राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों के अनुरूप बनाया गया।
- **आर्थिक वृद्धि का समर्थन:** हरित क्रांति और ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के वित्तपोषण में सहायक रहा।
- **जन विश्वास:** बैंकों में राज्य-समर्थित संस्थानों के रूप में जनता का विश्वास बढ़ा।

नकारात्मक प्रभाव

- **संचालन अक्षमता:** सार्वजनिक स्वामित्व ने "नौकरशाही" संस्कृति को उत्पन्न किया, जिसमें लालफीताशाही, धीमी निर्णय-प्रक्रिया और ग्राहक-केंद्रितता की कमी रही।
- **राजनीतिक हस्तक्षेप:** ऋण वितरण प्रायः वाणिज्यिक व्यवहार्यता के बजाय राजनीतिक विचारों से प्रभावित हुआ।
- **लाभप्रदता में गिरावट:** बैंक लाभ पर ध्यान केंद्रित करने से सामाजिक लक्ष्यों की ओर मुड़े, जिससे उनकी वित्तीय स्थिति कमजोर हुई और बार-बार सरकारी पुनर्पूजीकरण की आवश्यकता पड़ी।
- **नवाचार में कमी:** प्रतिस्पर्धा की कमी ने तकनीकी और सेवा सुधारों के लिए प्रोत्साहन घटा दिया।

निष्कर्ष और आगे की राह

- 1969 का बैंक राष्ट्रीयकरण ऋण तक पहुँच का विस्तार करने और समावेशी विकास को बढ़ावा देने में सहायक

रहा, लेकिन इससे अक्षमता एवं राजनीतिक हस्तक्षेप भी उत्पन्न हुए।

- अतः सुधारों का ध्यान सुदृढ़ शासन, डिजिटल बैंकिंग, वित्तीय साक्षरता और नियामक निगरानी पर होना चाहिए, साथ ही सामाजिक लक्ष्यों एवं दक्षता के बीच संतुलन बनाए रखते हुए बैंकों को अधिक स्वायत्तता या निजीकरण पर विचार करना चाहिए ताकि बेहतर प्रदर्शन सुनिश्चित हो सके।

Source: IE

भारतीय अंतरिक्ष स्थिति जागरूकता रिपोर्ट 2025 (ISSAR-2025)

संदर्भ

- हाल ही में भारतीय अंतरिक्ष स्थिति जागरूकता रिपोर्ट 2025 (ISSAR-2025) को इसरो ने बेंगलुरु में आयोजित *द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन ऑन स्पेसक्राफ्ट मिशन ऑपरेशन्स (SMOPS-2026)* के उद्घाटन सत्र के दौरान जारी किया।

ISSAR-2025 के प्रमुख निष्कर्ष

- **बढ़ती अंतरिक्ष भीड़भाड़:**
 - वैश्विक स्तर पर लगभग 1.6 लाख क्लोज अग्रोच अलर्ट, जिनमें से 1.5 लाख से अधिक भारतीय उपग्रहों से संबंधित।
 - *मेगा-नक्षत्र समूह* (स्टारलिंग, कुइपर आदि) की वृद्धि से टकराव का जोखिम और बढ़ने की संभावना।
- **टकराव परिहार उपाय (CAMs):** भारतीय उपग्रहों के लिए कुल CAMs में 14 मैनुवर (NISAR मिशन सहित) निम्न पृथ्वी कक्षा (LEO) में, 4 मैनुवर भूस्थिर कक्षा (GEO) में, और चंद्रयान-2 ऑर्बिटर के लिए 2 विशेष समायोजन शामिल।
- जहाँ संभव हो, समर्पित CAMs से बचने हेतु कक्षा मैनुवर का अनुकूलन किया गया।
- यह अंतरिक्ष स्थिति जागरूकता (SSA) प्रणालियों पर बढ़ती निर्भरता को दर्शाता है।
- **2025 में रिकॉर्ड अंतरिक्ष गतिविधि:** 328 प्रक्षेपण प्रयास (अब तक का सर्वाधिक), जिनमें 315 सफल रहे।

- 4,198 परिचालन उपग्रह जोड़े गए; कुल 4,651 नए अंतरिक्ष पिंड जोड़े गए।
- यह अंतरिक्ष उपयोग और वाणिज्यीकरण में तीव्र वृद्धि को दर्शाता है।
- **वायुमंडलीय पुनः प्रवेश:** 2025 में 1,911 वस्तुएँ पृथ्वी के वायुमंडल में पुनः प्रवेश कर गईं, जिनमें 1,002 अंतरिक्ष यान, 657 मलबा, 108 रॉकेट बॉडी और 144 अज्ञात वस्तुएँ शामिल।
 - यह 2024 की तुलना में कम है, जिसका कारण कम डी-ऑर्बिटिंग और निम्न सौर गतिविधि है।
- **उपग्रह नक्षत्रों की वृद्धि:** बड़े नक्षत्र (जैसे स्टारलिनक, कुइपर) तीव्र गति से विस्तार कर रहे हैं।
 - 2025 के अंत तक 9,396 स्टारलिनक उपग्रह कक्षा में सक्रिय रहे।
 - सक्रिय उपग्रहों की संख्या अंतरिक्ष मलबे से अधिक हो सकती है, जिससे समन्वय की जटिलता बढ़ेगी।
- **सौर गतिविधि का प्रभाव:** सौर चक्र 25 के शिखर ने उच्च कक्षीय क्षय दर उत्पन्न की और वर्ष की शुरुआत में पुनः प्रवेश की संख्या बढ़ाई।
- **परिचालन उपग्रह:** 22 LEO में; और 31 GEO में।
- **सक्रिय गहन अंतरिक्ष मिशन:** चंद्रयान-2 ऑर्बिटर; और आदित्य-L1।
- 2025 में श्रीहरिकोटा से 5 प्रक्षेपण; NASA-ISRO (NISAR) सफलतापूर्वक प्रक्षेपित; PSLV-C61 विफल (उपकक्षीय विसंगति); SpaDeX मिशन ने *डॉकिंग क्षमता* प्रदर्शित की।

भारत और विश्व के लिए निहितार्थ

- **बढ़ती अंतरिक्ष यातायात प्रबंधन आवश्यकता:** अधिक उपग्रहों से टकराव की संभावना बढ़ती है, और सक्रिय उपग्रह मलबे से अधिक हो सकते हैं।
- **महत्वपूर्ण अवसंरचना के लिए खतरा:** उपग्रह संचार, नेविगेशन (NavIC), मौसम पूर्वानुमान और रक्षा का समर्थन करते हैं।
 - किसी भी टकराव से आवश्यक सेवाएँ बाधित हो सकती हैं।
- **केस्लर सिंड्रोम का जोखिम:** बढ़ती भीड़भाड़ से अंतरिक्ष यातायात प्रबंधन चुनौतियाँ और केस्लर सिंड्रोम का खतरा उत्पन्न हो सकता है।
- **टकरावों की श्रृंखला:** जिससे कक्षीय क्षेत्रों का उपयोग असंभव हो सकता है।

भारत की प्रतिक्रिया और तैयारी

- **इसरो की SSA पहलें:** नेट्रा (NETRA) नेटवर्क निरंतर निगरानी और जोखिम न्यूनीकरण हेतु; IS4OM SSA का नोडल निकाय।
 - स्वदेशी रडार और दूरबीन प्रणालियाँ विकासाधीन।
- **मलबे-मुक्त अंतरिक्ष मिशन (DFSM):** 2030 तक मलबे-मुक्त मिशनों का लक्ष्य।
- **कुशल मैनुवर योजना:** नियमित कक्षा सुधारों को समायोजित कर अलग CAMs से बचना; ईंधन एवं मिशन जीवन का अनुकूलन।
 - इसरो निजी क्षेत्र के साथ *IN-SPACE* के माध्यम से सहयोग करता है, ताकि अंतरिक्ष उड़ान सुरक्षा से संबंधित सर्वोत्तम प्रथाओं का साझा किया जा सके।

अंतरिक्ष मलबा क्या है?

- अंतरिक्ष मलबा उन निष्क्रिय, मानव-निर्मित वस्तुओं को संदर्भित करता है जो अब किसी उपयोगी उद्देश्य की पूर्ति नहीं करते, परंतु पृथ्वी की कक्षा में घूमते रहते हैं।
- इसमें निष्क्रिय उपग्रह, प्रयुक्त रॉकेट चरण, टकराव या विस्फोट से उत्पन्न टुकड़े, तथा सूक्ष्म कण (पेंट फ्लेक्स, धातु के टुकड़े आदि) शामिल हैं।

मुख्य विशेषताएँ

- मुख्यतः निम्न पृथ्वी कक्षा (LEO) और भू-स्थैतिक कक्षा (GEO) में पाए जाते हैं।
- अत्यधिक गति से चलते हैं ($\approx 7-8$ किमी/सेकंड)।
- छोटे टुकड़े भी परिचालन उपग्रहों को क्षति पहुँचा सकते हैं।

भारतीय अंतरिक्ष परिदृश्य

- 2025 तक कुल 144 भारतीय अंतरिक्ष यान प्रक्षेपित।

- अंतर्राष्ट्रीय सहयोग: वैश्विक एजेंसियों (जैसे अमेरिकी अंतरिक्ष कमान) के साथ डेटा साझा करना।
- भारत अंतर-एजेंसी अंतरिक्ष मलबा समन्वय समिति (IADC) और संयुक्त राष्ट्र की अंतरिक्ष स्थिरता पहलों में भाग लेता है।
- अंतरिक्ष सुरक्षा हेतु अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों के साथ समन्वय।

Source: TH

संक्षिप्त समाचार

हरिवंश तीसरी बार राज्यसभा उपसभापति निर्वाचित

समाचार में

- हरिवंश को लगातार तीसरी बार राज्यसभा के उपसभापति के रूप में निर्वाचित चुना गया।

उपसभापति

- उपसभापति का पद संविधान के अनुच्छेद 89 के अंतर्गत निर्मित है, जिसमें प्रावधान है कि राज्यसभा जब भी यह पद रिक्त हो, अपने किसी सदस्य को उपसभापति चुने।
 - यह पद त्यागपत्र, पद से हटाए जाने या सदस्य का कार्यकाल समाप्त होने पर रिक्त होता है।
- **प्रक्रिया:** कोई भी राज्यसभा सांसद किसी अन्य सदस्य को उपसभापति पद हेतु नामित कर सकता है, जिसे किसी अन्य सांसद द्वारा अनुमोदित किया जाना आवश्यक है। नामित सदस्य को लिखित रूप में सहमति देनी होती है।
 - प्रत्येक सांसद केवल एक प्रस्ताव प्रस्तुत या अनुमोदित कर सकता है और नामांकन निर्धारित समयसीमा के भीतर जमा करना होता है।
- **भूमिका:** उपसभापति केवल राज्यसभा के सदस्यों द्वारा चुना जाता है और यह एक महत्वपूर्ण पद है, जो सभापति की अनुपस्थिति में सदन की अध्यक्षता करता है तथा उसके सुचारु संचालन में सहायक होता है।

स्रोत: AIR

सरकार द्वारा रिलिफ (RELIEF) योजना के कवरेज का विस्तार

समाचार में

- सरकार ने निर्यात संवर्धन मिशन के अंतर्गत RELIEF योजना का विस्तार किया है ताकि पश्चिम एशिया में बढ़ती मालभाड़ा लागत, बीमा प्रीमियम और समुद्री व्यवधानों से प्रभावित भारतीय निर्यातकों को सहायता मिल सके।

RELIEF योजना (निर्यात सुविधा हेतु सुदृढ़ता एवं लॉजिस्टिक्स हस्तक्षेप)

- सरकार ने मार्च 2026 में RELIEF योजना शुरू की थी ताकि भारतीय निर्यातकों को मालभाड़ा लागत, बीमा प्रीमियम और युद्ध-संबंधी व्यापार व्यवधानों से राहत दी जा सके।
- इसे ECGC के माध्यम से लागू किया जाता है और यह बीमा सहायता, जोखिम कवरेज तथा प्रतिपूर्ति सहायता प्रदान करती है, विशेषकर MSME निर्यातकों के लिए, जिसमें पूर्व और भविष्य की खेपें शामिल हैं।
- यह योजना उन खेपों को कवर करती है जो वितरण या ट्रांस-शिपमेंट हेतु UAE, सऊदी अरब, कुवैत, कतर, ओमान, बहरीन, इराक, ईरान, इजराइल और यमन जैसे देशों को भेजी जाती हैं।

विस्तार

- योजना का विस्तार कर मिस्र और जॉर्डन को भी पात्र गंतव्य देशों में शामिल किया गया है।
- यह भी स्पष्ट किया गया है कि 16 मार्च 2026 से नई ECGC संपूर्ण टर्नओवर पॉलिसियाँ लेने वाले निर्यातक कंपोनेंट II के अंतर्गत सहायता प्राप्त करने के पात्र होंगे।

स्रोत: PIB

राष्ट्रीय न्यूनतम वेतन स्तर (NFLMW)

संदर्भ

- नोएडा के औद्योगिक क्षेत्र में हाल ही में फैक्ट्री श्रमिकों के असंतोष ने केंद्र सरकार को भारत के लंबे समय से स्थिर राष्ट्रीय न्यूनतम वेतन स्तर (NFLMW) की समीक्षा हेतु

प्रेरित किया है। वर्तमान में ₹350-₹450/दिन का प्रस्ताव विचाराधीन है।

NFLMW के बारे में

- NFLMW एक आधारभूत वेतन सीमा है जिसे केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित किया जाता है, जिसके नीचे कोई भी राज्य अपना न्यूनतम वेतन कानूनी रूप से तय नहीं कर सकता।
- राज्यों को अपने स्थानीय कौशल स्तर, भौगोलिक स्थिति और व्यवसाय को ध्यान में रखते हुए इस न्यूनतम स्तर से ऊपर वेतन देते तय करनी होती हैं।
- इसकी अवधारणा राष्ट्रीय ग्रामीण श्रम आयोग (NCRL) से उत्पन्न हुई थी, जिसकी अध्यक्षता 1991 में झिनाभाई दार्जी ने की थी। प्रारंभ में इसे स्वैच्छिक आधार पर अंतर-राज्यीय वेतन असमानताओं को कम करने हेतु सुझाया गया था।
- वेतन संहिता, 2019 ने इसे परामर्शात्मक दिशा-निर्देश से उन्नत कर कानूनी रूप से बाध्यकारी वैधानिक न्यूनतम स्तर बना दिया।

स्रोत: ET

भारत का प्रथम वॉटर-न्यूट्रल कोचिंग डिपो

समाचार में

- अहमदाबाद स्थित कांकड़िया कोचिंग डिपो अभिनव अपशिष्ट जल उपचार और पुनः उपयोग प्रणालियों को अपनाकर भारत का प्रथम वॉटर-न्यूट्रल रेलवे डिपो बन गया है।

कांकड़िया कोचिंग डिपो : भारत का प्रथम वॉटर-न्यूट्रल रेलवे डिपो

- यह प्रतिदिन लगभग 1.60 लाख लीटर तथा वार्षिक लगभग 5.84 करोड़ लीटर जल की बचत करता है, जिससे स्वच्छ जल पर निर्भरता कम होती है।
- इसमें फाइटोरिमेडिएशन तकनीक का उपयोग किया जाता है, जिसमें पौधे अपशिष्ट जल को शुद्ध करने में सहायक होते हैं। इसके बाद वेटलैंड ट्रीटमेंट, कार्बन और रेत निस्पंदन किया जाता है।

- जल को आगे निस्पंदन और यूवी डिसइंफेक्शन द्वारा शुद्ध किया जाता है, जिससे यह संचालन में पुनः उपयोग हेतु सुरक्षित हो जाता है और बाहर छोड़ा नहीं जाता।

महत्त्व

- यह जल उपभोग और परिचालन लागत को कम करता है तथा पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देता है।
- भारत में हरित और अधिक दक्ष रेलवे अवसंरचना के लिए यह एक आदर्श मॉडल के रूप में कार्य करता है।

फाइटोरिमेडिएशन

- यह एक प्रक्रिया है जिसमें पौधों का उपयोग प्रदूषित मृदा, जल या भूजल को शुद्ध करने हेतु किया जाता है।
- पौधे धातु, कीटनाशक, विस्फोटक और तेल जैसे प्रदूषकों को अवशोषित या विघटित करते हैं।
- यह कम प्रदूषण वाले क्षेत्रों में सर्वाधिक प्रभावी होता है, क्योंकि उच्च प्रदूषण स्तर पौधों की वृद्धि को धीमा कर सकते हैं।

स्रोत: DD

भारत के चमगादड़ों की स्थिति रिपोर्ट 2024-25

संदर्भ

- नेचर कंजर्वेशन फ़ाउंडेशन ने बैट कंजर्वेशन इंटरनेशनल, वर्ल्ड वाइड फ़ंड फ़ॉर नेचर और सेंटर फ़ॉर वाइल्डलाइफ़ स्टडीज़ के सहयोग से प्रथम राष्ट्रीय आकलन रिपोर्ट “भारत के चमगादड़ों की स्थिति, 2024-25” जारी की है, जिसमें भारत में चमगादड़ों की स्थिति, विविधता और खतरों को उजागर किया गया है।

प्रमुख निष्कर्ष

- **भौगोलिक वितरण:** भारत में लगभग 135 चमगादड़ प्रजातियाँ पाई जाती हैं। पश्चिम बंगाल में सर्वाधिक 68 प्रजातियाँ, मेघालय में 66, उत्तराखंड में 52, केरल और कर्नाटक में 41-41 तथा सिक्किम में 43 प्रजातियाँ दर्ज की गईं।

- शहरों में दिल्ली में 15 प्रजातियाँ पाई गईं, जबकि शहरीकरण का दबाव विद्यमान है।
- **स्थानिकता एवं खतरे की स्थिति:**
 - 16 प्रजातियाँ भारत में स्थानिक हैं।
 - 7 प्रजातियाँ IUCN द्वारा थ्रैटेड सूची में हैं।
 - 35 प्रजातियाँ डेटा डेफिशिएंट या अप्रयुक्त हैं।
- **मुख्य खतरे:** शहरीकरण, वनों की कटाई, भूमि उपयोग परिवर्तन और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव।
 - रिपोर्ट ने उत्तर-पूर्व भारत और पश्चिमी घाट में रोगजनकों की निगरानी बढ़ाने की सिफारिश की है ताकि जूनोटिक रोग प्रकोपों को रोका जा सके। साथ ही पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रभावों पर अधिक अध्ययन की आवश्यकता बताई है।

चमगादड़ों के बारे में प्रमुख तथ्य

- चमगादड़ चिरोप्टेरा गण के स्तनधारी हैं और निरंतर शक्तिशाली उड़ान में सक्षम एकमात्र स्तनधारी हैं। इनके पंख लम्बी उँगलियों की हड्डियों पर फैली त्वचा से बने होते हैं।
- विश्वभर में 1,400 से अधिक प्रजातियाँ हैं, जो कुल स्तनधारी प्रजातियों का लगभग 20% हैं। ये अंटार्कटिका को छोड़कर लगभग सभी महाद्वीपों में पाए जाते हैं और मुख्यतः उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में विकसित होते हैं।
- पारिस्थितिकी तंत्र में इनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है — ये पौधों के परागणकर्ता, बीज प्रसारक और कीट नियंत्रणकर्ता हैं, जिनमें कृषि कीट भी शामिल हैं।
- अधिकांश चमगादड़ इकोलोकेशन (उच्च आवृत्ति ध्वनि तरंगों) का उपयोग करते हैं, जिससे वे अंधेरे में दिशा-निर्देशन और शिकार कर पाते हैं।
- पक्षियों के विपरीत, चमगादड़ आसानी से ज़मीन से उड़ान नहीं भर सकते; वे उल्टे लटककर उड़ान भरते हैं।
- ये दिन में विश्राम करते हैं, प्रायः गुफाओं या खोखले पेड़ों में, और विभिन्न आकार की कॉलोनियाँ बनाते हैं।
- इंडियन फ्लाईंग फॉक्स (टेरोपस जाइगोटियस) भारत के सबसे बड़े चमगादड़ों में से एक है और परागण व पारिस्थितिकी तंत्र स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- चमगादड़ कोरोनावायरस, निपाह वायरस और इबोला सहित अनेक विषाणुओं के ज्ञात वाहक हैं, फिर भी इनमें अद्भुत प्रतिरक्षा एवं दीर्घायु पाई जाती है, जो वैज्ञानिक अनुसंधान का विषय है।

स्रोत: IE